Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **धौलावीर ।**

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

धौलावीर।

गुजरात के कच्छ जिले के भचाऊ तालुक में स्थित इस स्थल की खुदाई से यह सिद्ध हो गया है कि सैंधव सभ्यता का सबसे प्राचीन और सर्वाधिक सुव्यवस्थित, खूबसूरत तथा सबसे बड़ा नगर भारत में धौलावीर है। धौलावीरा पुरास्थल की खुदाई में मिले अवशेषों का प्रसार 'मनहर' एवं 'मानसर' नामक नालों के बीच में हुआ था। धौलावीरा नामक हड़प्पाई संस्कृति वाले इस नगर की योजना समानांतर चतुर्भुज के रूप में की गयी थी। इस नगर की लम्बाई पूरब से पश्चिम की ओर है

धौलावीरा की खोज सर्वप्रथम 1967-68 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के जे० पी० जोशी ने की तथा 1990-91 मे आर० एस० विष्ट द्वारा यहाँ के विस्तृत क्षेत्र पर उत्खनन कार्य प्रारम्भ किया गया जो निरंतर कई वर्षों तक चलता रहा। उत्खनन के फलस्वरूप यहाँ से विकसित सैन्धव सध्यता के एक ऐसे नगर-विन्यास का

साक्ष्य मिलता है जो अपने आप में अद्वितीय है। इस नगर का क्षेत्रफल 100 हैक्टयर था। इस प्रकार यह भारत में स्थित दो विशालतम सैन्धव स्थलों में एक है । इस प्रकार का दूसरा स्थल राखीगढ़ी (हरियाणा) है। जहाँ इस सभ्यता के अन्य नगर केवल दो भागों-दुर्ग तथा निचला नगर, मे विभाजित थे, धौलावीर तीन भागों-दुर्ग(Citadel), मध्यम नगर (Middle town) तथा निचला नगर (Lower town) में विभाजित था। सम्पूर्ण क्षेत्र को घेरती हुई चारो दिशाओ में बाहरी दीवारें बनाई गयी थी जबकि प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अलग किलेबन्दी भी थी। 70 से 140 मीटर विशाल खुले क्षेत्र थे जो आन्तरिक एवं वाह्य प्राचीरो से महत्वपूर्ण स्थानो पर जुड़े हुए थे। प्राचीर-युक्त क्षेत्र दो प्रकार के थे -पहला जय दुर्गे के भीतर तथा दूसरा नगर के बीच में स्थित था । संभवत पहले में शासक वर्ग तथा दूसरे में पदाधिकारी निवास करते थे मध्य क्षेत्र केवल यही से मिलता है ।प्राचीन युक्त बस्तियों में प्रवेश के लिए विशाल एवं भव्य द्वार बनाए गए थे। मध्यवर्ती प्राचीरयुक्त दुर्ग के उत्तरी द्वार के पीछे

12.80 मीटर लम्बा तालाब खुदाई में मिला है। इसमें वर्षा का जल एकत्र करने के लिये 24x70 मीटर के आकार का जलमार्ग बनाया गया था। घोड़े की कलाकृतियों के अवशेष भी मिलते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यहाँ से पालिशदार श्वेत पाषाण खण्ड (Polished sione blocks) बरी संख्या में मिलते है तथा मिट्टी सफेद है। संभवतः इनका उपयोग स्तम्भों के रूप मे हुआ था ।यह भी एक विरल उपलब्धि है जिससे पता चलता है कि पत्थरों पर पालिश करने की कला से सैन्धव निवासी सुपरिचित थे और यह कही बाहर से यहाँ नही आई थो। इसके अतिरिक्त सैन्धव लिपि के दस ऐसे अक्षर प्रकाश में आये हैं जो काफी बड़े है तथा विश्व की प्राचीन अक्षरमाला में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। सैन्धव सभ्य के संदर्भ में यह एक अद्भुत खोज है।

इस प्रकार भवन निर्माण, जल निकास व्यवस्था, कलाकृतियों की पृष्ट भूमि नगर नियोजन तथा लिपि की दृष्टि से धौलावीर एक उत्कृष्ट नगर था।नदी तट पर स्थित अन्य नगरों के समान इस नगर का पतन भी जलस्रोत

सूख जाने अथवा नदियों की धारा में परिवर्तन के कारण संभव हुआ।

References: Internet & Competitive books.